शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अगस्त 2022
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पं. गंगाचरण दीक्षित और उनकी 'अन्तर्धारा'

श्रीमती अभिलाषा पाण्डेय (शोधार्थी)
डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन (निर्देशक)
अध्यक्ष - हिन्दी विभाग, निर्देशक - हिन्दी शोध केन्द्र,
सेवासदन महाविद्यालय
बुरहानपुर, मध्यप्रदेश, भारत

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

पं. गंगाचरण दीक्षित का जन्म दिसंबर 1901 में पं. बिहारीलाल दीक्षित के यहाँ म.प्र. के बुरहानपुर जिले में हुआ था। इनकी माताजी का नाम सुंदर बाई था। आपकी प्रारंभिक शिक्षा बुरहानपुर में ही सम्पन्न हुई और उच्च शिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी उ.प्र. और कलकत्ता विश्वविद्यालय में हुई। आप खण्डवा संसदीय क्षेत्र के सांसद रहे। शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में आपने सन् 1922 में बुरहानपुर नगर में हिन्दी साहित्य समिति की स्थापना के साथ-साथ संचालन भी किया। इन्होंने निमाड़ी लोक साहित्य पर निबंध भी लिखे जो नागपुर आकाशवाणी केन्द्र से प्रसारित हुए। पं. गंगाचरण दीक्षित द्वारा स्थापित हिन्दी साहित्य समिति ने हस्तलिखित पत्रिका 'मधुकण' दो बार प्रकाशित की। सन् 1964 में हिंदी साहित्य समिति, बुरहानपुर ने उनके कविता-संग्रह 'अन्तर्धारा' को प्रकाशित किया। पंडित गंगाचरण दीक्षित बुरहानपुर जिले की शिक्षण संस्थाओं के विकास हेतु सदैव प्रयत्नशील रहे। उन्होंने बुरहानपुर जिले में कला, वाणिज्य, विज्ञान विद्यालय तथा आयुर्वेद महाविद्यालय की स्थापना तथा विकास में अपना महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय योगदान दिया। आपने देशहित में स्वाधीनता आन्दोलन में भी भाग लिया। स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय होने के कारण इन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा।

गंगाचरण दीक्षित और 'अंतर्धारा'

पं.गंगाचरण दीक्षित 'आकुल' का प्रथम काव्य संग्रह है। हिन्दी साहित्य समिति द्वारा इसका प्रकाशन हुआ। संग्रह में 56 कविताएँ संगृहीत हैं। कवि की सहज आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति है। कविता के प्रति जिज्ञासा कवि को बाल्यकाल से ही रही है या यह भी कह सकते है कि कविता उनको पैतृक सम्पत्ति के रूप में मिली। इनके काका देवीप्रसाद दीक्षित 'ख्याल' लिखा करते थे। इनके पिता श्री बिहारीलाल दीक्षित की भी कविता के प्रति रूचि थी। वे रामचरित मानस की कथा को अपने शब्दों में कहते तथा उनका तत्कालीन कवियों की रचनाओं के रसास्वादन में अधिक समय व्यतीत होता था। इसी प्रकार इनके ज्येष्ठ भ्राता स्व. श्री रामचरणलाल दीक्षित काव्य मर्मज्ञ एवं कवि थे। इनके मंझले भ्राता श्री विष्णुप्रसाद दीक्षित भी कवि थे। उन्होंने उपासनी लीलामृत 'उपासनी रत्नायण' नामक महाकाव्य की रचना की है।

अन्तर्धारा काव्य संग्रह में संकलित अधिकतर रचनाएं आपके अध्ययनकाल की हैं। जिस समय यह हिन्दू विश्वविद्यालय में अध्ययन करते थे, तभी इन्हें इनके गुरुवर सर्वश्री डॉ. श्यामसुन्दर

दास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, कविवर हरिऔध व लाला भगवानदीन के प्रभाव के प्रसाद के स्वरूप छन्दोबद्ध रचनाएं लिखने लगे। एक तो विरासत में प्राप्त काव्य का पारिवारिक वातावरण दूसरा इतने महान गुरुवरों का सानिध्य फिर कैसे पीछे रह सकते थे।

पं.गंगावरण दीक्षित की अधिकांश रचनाएं द्विवेदी युग तक चली आने वाली कवित्त शैली तथा भाव धारा से समन्वित हैं। परन्तु युग की बदलती लहर से वह अपने आपको नहीं बचा पाए। इनकी कविताओं में कृष्ण-भक्ति, कृष्ण-लीला के वैष्णव भाव है।

"काल्हि के कवि रीझिहैं तो कविताई है,
न तरू राधिका गोविन्द सुमिर बहानो"[1]

इसमें खड़ी बोली है, ऐसी खड़ी बोली जो ब्रज के मिठास को भी झुठलाने की क्षमता रखती है। अनुप्रास की रचनाओं में जो स्थिति है वह ऐसी नहीं जान पड़ती कि भारी अन्वेषण का परिणाम हो, वह सहज और भावों को संगीतात्मक बनाने में सहायक सिद्ध होती है। कहीं-कहीं उदाहरणार्थ 'प्रभात' शीर्षक रचना में कवि ने संस्कृत, खड़ीबोली और ब्रज में मेल कराने का प्रयत्न भी किया है। 'प्रभात' नामक शीर्षक की रचना में हरिऔध के प्रियप्रवास की शैली का प्रभाव जान पड़ता है -

क्वणन कोमल मंजु विषाण का
निक्वण मंजु निनाद मृदंग का
सहित मन्द्र सुढोलक झांझ के,
ध्वनित है करता नभ प्रान्त को।
विहग वृन्द, मलिन्द, मराल औं,
विपिन त्रोण निकुन्ज तड़ाग को।
ध्वनित शिन्तिज से करते हुए
सुकवि का मन-मोर नचावते।[2]

वहीं 'कामना' शीर्षक में जगन्नाथदास 'रत्नाकर' का स्मरण हो आता है। संग्रह की अनेक कविताएं कवित्त हैं, कुछ स्फुट-मुक्तक हैं पर 'प्रभात', कवि की महत्ता अपेक्षाकृत लम्बी वर्णनात्मक रचनाएं हैं। मुक्तकों में कवि का विषाद, अतृप्त, नैराश्य, आदि अभावात्मक भाव है जो कवि के 'आकुल' उपनाम को सार्थक करता है।

पं.गंगाचरण दीक्षित ने अपनी रचनाएं गीत के रूप में लिखी हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार उनके कण्ठ से कई बार गीत सुनकर कान और मन को बड़े आनंद की अनुभूति होती थी। तत्कालीन कवियों की माने या फिर उनके पुत्र (प्रो. विजय दीक्षित) की तो यदि कवि में आत्मविगोपन की परिकाष्ठा नहीं होती तो वह कवि सम्मेलनों के प्रिय कवि बनकर केवल भारत में ही नहीं वरन् विश्व में अपनी एक विशेष पहचान बना लेते और साथ ही हिन्दी कवियों की पंक्तियों में आसीन हो सकते थे, परन्तु राजनीति ने उनके स्रोत को बिल्कुल सुखा दिया। कुछ समय पश्चात् उन्होंने अपने अंदर के कवि को पुनः जागृत किया और अपनी कविताओं का संग्रह तैयार कर उसे प्रकाशन हेतु दिया। पं.गंगाचरण दीक्षित ने अपने काव्य-संग्रह में प्रत्येक विषय को लेकर रचना रची है। जैसे- 'चाह' रचना में कवि ने भौतिक सुख की लालसा ना करते हुए केवल श्रीकृष्ण को देखने की चाह व्यक्त की है -

तोड़ डालूँ नातों को मरोड़ डालूँ माया जाल,
आह साँवले को देखने की कराह है।[3]

पं.गंगाचरण दीक्षित ने अपने काव्य में पारस्परिक छंदों का प्रयोग किया है। उनके काव्य में छंद देखने को मिलते हैं। उदाहरण के लिए घनाक्षरी छंद का एक प्रयोग देखिए -

बसा हुआ नेत्र में हैं तो भी नेत्र आकुल हैं
क्यों यह देखने की भला अनहोनी चाह है।[4]
दूसरी ओर कवि ने अपने काव्य में अलंकारों एवं रस आदि का प्रयोग भी किया है। रूपक अलंकार का एक उदाहरण देखें -
नीलांबर अंबर जड़ित तारों से है सोहे,
केशों की समानता सिवारन ने पाई है।[5]
नुपूरों की मंजु ध्वनि अलिपुंज बीच बसी
गात की गुराई शुभ्र चाँदनी में आई है।[6]
वीर रस, अद्भुत रस, क्रोध रस, शृंगार रस/वियोग रस/संयोग रस, शांत रस आदि रसों की इनके काव्य में प्रधानता है। वीर रस का एक सुन्दर उदाहरण देखें -
सोते में सताना कायरों का है सलोने काम,
वीर है तो आजा जागते में देखूं वीरता।
आँख खुलते न कहीं भाग जावे फाँदू ऐसा
वरूणी के जाल में कि छोड़ बैठे धीरता।[7]
पं.गंगाचरण दीक्षित के काव्य में वेदना, संवेदना (शब्द संवेदना, मानवीय संवेदना, राष्ट्रीय संवेदना, धार्मिक संवेदना) भी मिलती है। मानवीय संवेदना के अंतर्गत दुःखात्मक संवेदना का एक उदाहरण देखें -
अपने ही हाथों अपने मस्तक को है यहाँ काटते।
अपने ही हाथों अपने घर को है आज जलाते।
मोह रूप पर कुर्बानी की जी में हे बैचेनी।
साधन कैसे पायेगा बढ़ती जब दिलगीरी।
लुटी शान्ति है जीवन की है यौवन के उन्माद।
अस्ताचल पर लिख जाएगी मेरी भूली याद।।[8]
पं. गंगाचरण दीक्षित एक प्रतिष्ठित परिवार से होने के उपरांत स्वयं भी खण्डवा के सांसद रहे, लेकिन धार्मिकता के पथ से वह कभी विचलित नहीं हुए वे जाति से ब्राह्मण होने के साथ-साथ कर्म, धर्म से भी ब्राह्मण थे। उनके काव्य में धर्म से भी संबंधित रचनाएं हमें देखने को मिलती हैं -
साधता न साँस, माला मनके न फेरता मैं,
फेरता न आँखें प्रभु पाने की पुकार में।
जाता नहीं मज्जन हितार्थ जान्हवी के तट,
साथ नहीं देता पाहि पाहि की पुकार मैं।[9]
पं.गंगाचरण दीक्षित कर्म की प्रधानता को महत्व देते हैं।
चाहो नहीं ऋद्धि सिद्धि, संपत्ति कुबेर को मैं
चाहों नहीं चारों फल मान को न ताज मैं।।
मातपद पंकज की प्राणन की भूरि धूरि
आँखिन में आजि प्राणवारों अब काज मैं।।[10]

निष्कर्ष

पं. गंगाचरण दीक्षित के काव्य-संग्रह 'अन्तर्धारा' की समस्त रचनाओं को आज की युवा पीढ़ी यदि आत्मसात करे एवं अवसर अनुसार उनकी रचना का पाठ करे या गीत रूप में सुनाए तो यह 'अन्तर्धारा' निरंतर धारा बनकर प्रवाहित होती रहेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 अंतर्धारा, पंडित गंगाचरण दीक्षित, पृष्ठ 19
2 वही, पृष्ठ 26
3 वही, पृष्ठ 13
4 वही, पृष्ठ 34
5 वही, पृष्ठ 42
6 वही, पृष्ठ 42
7 वही, पृष्ठ 32
8 वही, पृष्ठ 63
9 वही, पृष्ठ 15
10 वही, पृष्ठ 20